



Shailendra Singh Kadam

05 Jul 1977

06:00 PM

Mhow

Model: Web-MyKundli

Order No: 120907701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 05/07/1977
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 18:00:00 घंटे
इष्ट _____: 30:32:01 घटी
स्थान _____: Mhow
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:32:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:49:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:26:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 17:33:16 घंटे
वेलान्तर _____: -00:04:27 घंटे
साम्पातिक काल _____: 12:26:49 घंटे
सूर्योदय _____: 05:47:11 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:15:09 घंटे
दिनमान _____: 13:27:58 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 19:48:54 मिथुन
लग्न के अंश _____: 03:07:09 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: धनु - गुरु
राशि-स्वामी _____: कुम्भ - शनि
नक्षत्र-चरण _____: शतभिषा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: आयुष्मान
करण _____: तैतिल
गण _____: राक्षस
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: सू-सूरज
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

Prem Pagare

Swatik Future Point
Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh
Mo.No. 9826471293
Email:- prempagare19@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1899	आषाढ़	14
पंजाबी	संवत : 2034	आषाढ़	22
बंगाली	सन् : 1384	आषाढ़	21
तमिल	संवत : 2034	आनी	21
केरल	कोल्लम : 1152	मिथुनम	21
नेपाली	संवत : 2034	आषाढ़	22
चैत्रादि	संवत : 2034	श्रावण	कृष्ण 5
कार्तिकादि	संवत : 2034	आषाढ़	कृष्ण 5

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 5
तिथि समाप्ति काल _____ : 20:59:03
जन्म तिथि _____ : 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : शतभिषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 21:06:17 घंटे
जन्म योग _____ : शतभिषा
सूर्योदय कालीन योग _____ : आयुष्मान
योग समाप्ति काल _____ : 21:12:33 घंटे
जन्म योग _____ : आयुष्मान
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 09:23:18 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 51:32:14
भभोग _____ : 59:17:58
भोग्य दशा काल _____ : राहु 2 वर्ष 3 मा 25 दि

घात चक्र

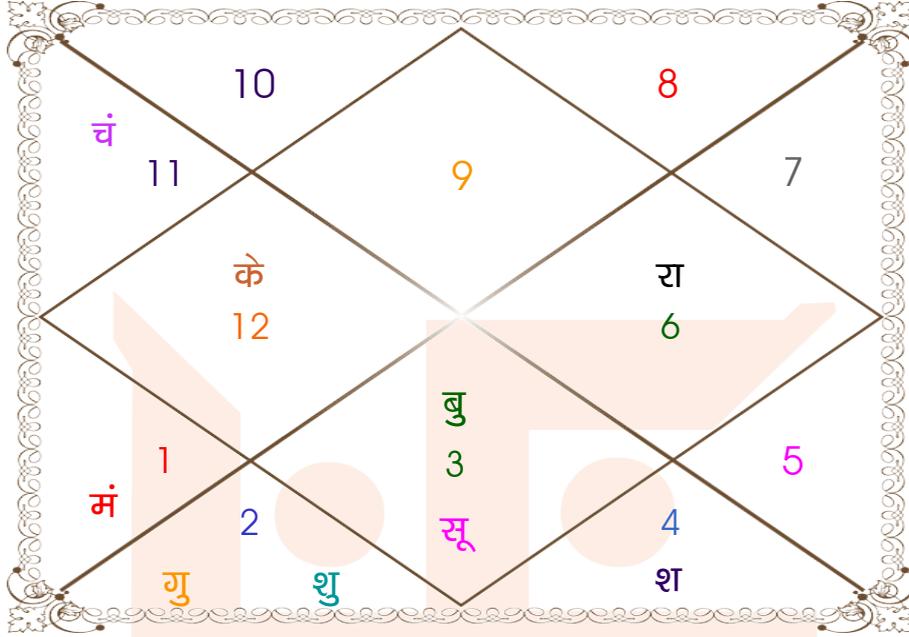
मास _____ : चैत्र
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : आर्द्रा
योग _____ : गण्ड
करण _____ : किंस्तुघ्न
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : मिथुन
सूर्य _____ : वृष
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : मिथुन
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कर्क
शुक्र _____ : सिंह
शनि _____ : मेष
राहु _____ : कन्या

Prem Pagare

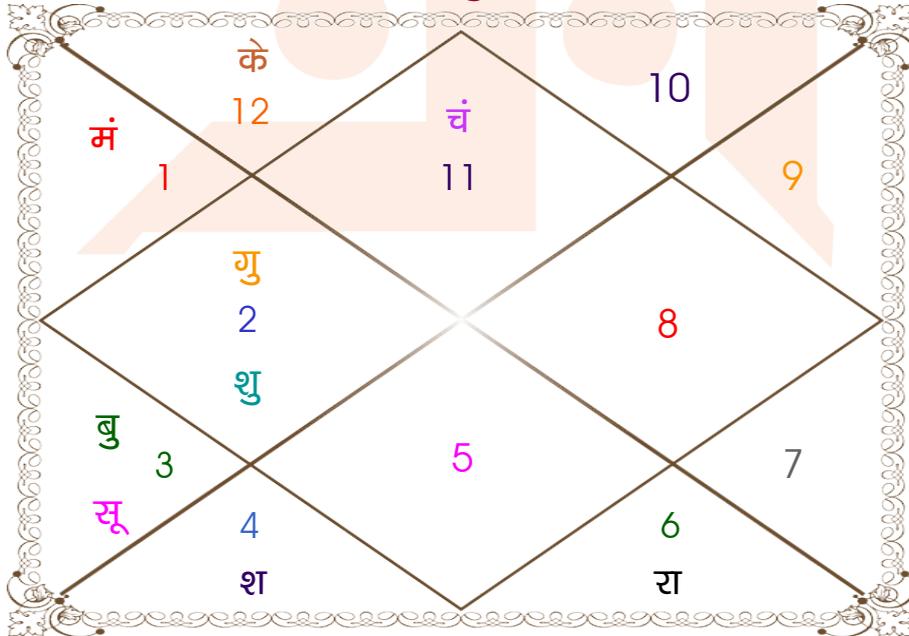
Swatik Future Point
Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh
Mo.No. 9826471293
Email:- prempagare19@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

के	मं	शु गु	सू बु
चं			श
ल			रा

लग्न कुंडली

शु गु	मं	के
बु सू		चं
	श	
रा		ल

विंशोत्तरी
राहु 2वर्ष 3मा 25दि
राहु

05/07/1977

30/10/2081

राहु	31/10/1979
गुरु	31/10/1995
शनि	30/10/2014
बुध	31/10/2031
केतु	30/10/2038
शुक्र	30/10/2058
सूर्य	30/10/2064
चन्द्र	30/10/2074
मंगल	30/10/2081

योगिनी
धान्या 0वर्ष 4मा 19दि
उल्का

24/11/2022

23/11/2028

उल्का	24/11/2023
सिद्धा	23/01/2025
संकटा	25/05/2026
मंगला	25/07/2026
पिंगला	24/11/2026
धान्या	25/05/2027
भ्रामरी	24/01/2028
भद्रिका	23/11/2028

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

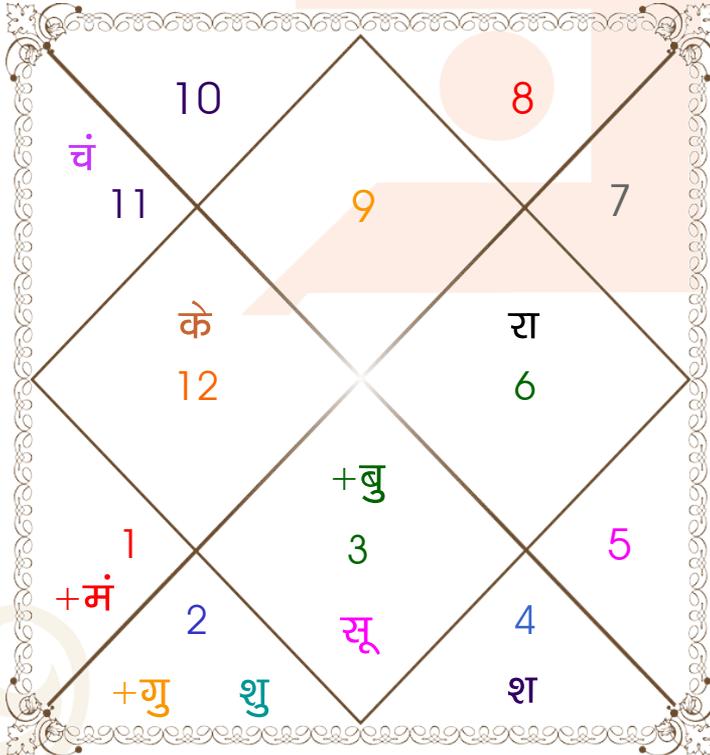
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद नं.	रा न	न अं.	स्थिति
लग्न	धनु	03:07:09	327:46:26	मूल	1	19	गुरु केतु	सूर्य ---
सूर्य	मिथु	19:48:54	00:57:12	आर्द्रा	4	6	बुध राहु	मंगल सम राशि
चंद्र	कुंभ	18:16:53	13:18:54	शतभिषा	4	24	शनि राहु	चंद्र सम राशि
मंगल	मेष	27:54:33	00:42:48	कृतिका	1	3	मंगल सूर्य	चंद्र स्वराशि
बुध	अ मिथु	26:22:23	02:05:30	पुनर्वसु	2	7	बुध गुरु	केतु स्वराशि
गुरु	वृष	27:13:52	00:13:21	मृगशिरा	2	5	शुक्र मंगल	गुरु शत्रु राशि
शुक्र	वृष	05:16:35	01:03:34	कृतिका	3	3	शुक्र सूर्य	बुध स्वराशि
शनि	कर्क	22:03:31	00:06:54	आश्लेषा	2	9	चंद्र बुध	सूर्य शत्रु राशि
राहु	व कन्या	26:46:55	00:04:06	चित्रा	2	14	बुध मंगल	गुरु मूलत्रिकोण
केतु	व मीन	26:46:55	00:04:06	रेवती	4	27	गुरु बुध	गुरु मूलत्रिकोण
हर्ष	व तुला	14:11:34	00:00:34	स्वाति	3	15	शुक्र राहु	बुध ---
नेप	व वृश्चि	20:27:42	00:01:22	ज्येष्ठा	2	18	मंगल बुध	शुक्र ---
प्लूटो	कन्या	17:54:32	00:00:28	हस्त	3	13	बुध चंद्र	बुध ---
दशम भाव	कन्या	13:45:42	--	हस्त	--	13	बुध चंद्र	राहु --

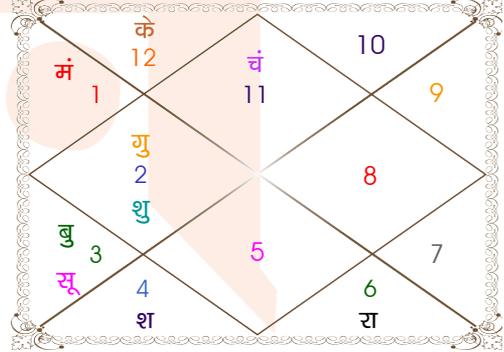
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:32:41

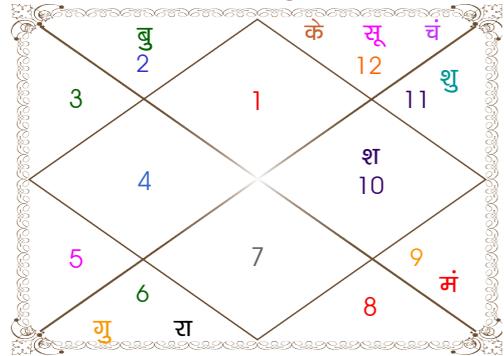
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 19:53:34	धनु 03:07:09
2	धनु 19:53:34	मकर 06:40:00
3	मकर 23:26:25	कुम्भ 10:12:51
4	कुम्भ 26:59:16	मीन 13:45:42
5	मीन 26:59:16	मेष 10:12:51
6	मेष 23:26:25	वृष 06:40:00
7	वृष 19:53:34	मिथुन 03:07:09
8	मिथुन 19:53:34	कर्क 06:40:00
9	कर्क 23:26:25	सिंह 10:12:51
10	सिंह 26:59:16	कन्या 13:45:42
11	कन्या 26:59:16	तुला 10:12:51
12	तुला 23:26:25	वृश्चिक 06:40:00

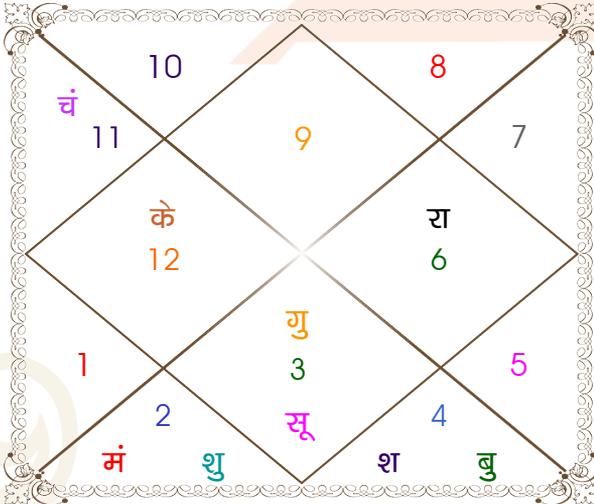
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	03:07:09
2	मकर	05:06:40
3	कुम्भ	09:47:49
4	मीन	13:45:42
5	मेष	13:32:48
6	वृष	09:12:17
7	मिथुन	03:07:09
8	कर्क	05:06:40
9	सिंह	09:47:49
10	कन्या	13:45:42
11	तुला	13:32:48
12	वृश्चिक	09:12:17

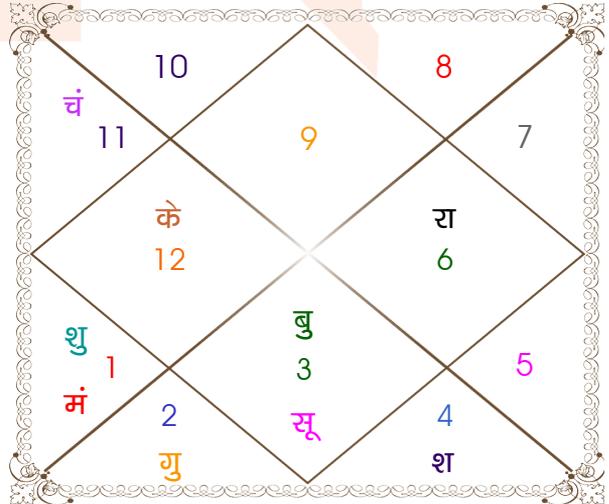
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 2 वर्ष 3 मास 25 दिन

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
05/07/1977	31/10/1979	31/10/1995	30/10/2014	31/10/2031
31/10/1979	31/10/1995	30/10/2014	31/10/2031	30/10/2038
00/00/0000	गुरु 18/12/1981	शनि 02/11/1998	बुध 28/03/2017	केतु 28/03/2032
00/00/0000	शनि 30/06/1984	बुध 13/07/2001	केतु 25/03/2018	शुक्र 28/05/2033
00/00/0000	बुध 06/10/1986	केतु 21/08/2002	शुक्र 23/01/2021	सूर्य 03/10/2033
00/00/0000	केतु 12/09/1987	शुक्र 21/10/2005	सूर्य 30/11/2021	चंद्र 04/05/2034
00/00/0000	शुक्र 13/05/1990	सूर्य 03/10/2006	चंद्र 01/05/2023	मंगल 30/09/2034
00/00/0000	सूर्य 01/03/1991	चंद्र 03/05/2008	मंगल 27/04/2024	राहु 18/10/2035
05/07/1977	चंद्र 30/06/1992	मंगल 12/06/2009	राहु 15/11/2026	गुरु 23/09/2036
चंद्र 12/10/1978	मंगल 06/06/1993	राहु 18/04/2012	गुरु 20/02/2029	शनि 02/11/2037
मंगल 31/10/1979	राहु 31/10/1995	गुरु 30/10/2014	शनि 31/10/2031	बुध 30/10/2038

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
30/10/2038	30/10/2058	30/10/2064	30/10/2074	30/10/2081
30/10/2058	30/10/2064	30/10/2074	30/10/2081	00/00/0000
शुक्र 01/03/2042	सूर्य 17/02/2059	चंद्र 30/08/2065	मंगल 29/03/2075	राहु 12/07/2084
सूर्य 01/03/2043	चंद्र 19/08/2059	मंगल 31/03/2066	राहु 15/04/2076	गुरु 06/12/2086
चंद्र 30/10/2044	मंगल 24/12/2059	राहु 30/09/2067	गुरु 22/03/2077	शनि 12/10/2089
मंगल 30/12/2045	राहु 17/11/2060	गुरु 29/01/2069	शनि 01/05/2078	बुध 30/04/2092
राहु 30/12/2048	गुरु 05/09/2061	शनि 31/08/2070	बुध 28/04/2079	केतु 19/05/2093
गुरु 31/08/2051	शनि 18/08/2062	बुध 30/01/2072	केतु 24/09/2079	शुक्र 19/05/2096
शनि 30/10/2054	बुध 25/06/2063	केतु 30/08/2072	शुक्र 23/11/2080	सूर्य 12/04/2097
बुध 30/08/2057	केतु 31/10/2063	शुक्र 01/05/2074	सूर्य 31/03/2081	चंद्र 05/07/2097
केतु 30/10/2058	शुक्र 30/10/2064	सूर्य 30/10/2074	चंद्र 30/10/2081	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 2 वर्ष 4 मा 8 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु 27/04/2024 15/11/2026	बुध - गुरु 15/11/2026 20/02/2029	बुध - शनि 20/02/2029 31/10/2031	केतु - केतु 31/10/2031 28/03/2032	केतु - शुक्र 28/03/2032 28/05/2033
राहु 14/09/2024 गुरु 16/01/2025 शनि 13/06/2025 बुध 23/10/2025 केतु 16/12/2025 शुक्र 20/05/2026 सूर्य 06/07/2026 चंद्र 21/09/2026 मंगल 15/11/2026	गुरु 05/03/2027 शनि 14/07/2027 बुध 08/11/2027 केतु 27/12/2027 शुक्र 13/05/2028 सूर्य 23/06/2028 चंद्र 31/08/2028 मंगल 18/10/2028 राहु 20/02/2029	शनि 25/07/2029 बुध 11/12/2029 केतु 07/02/2030 शुक्र 21/07/2030 सूर्य 08/09/2030 चंद्र 29/11/2030 मंगल 25/01/2031 राहु 22/06/2031 गुरु 31/10/2031	केतु 08/11/2031 शुक्र 03/12/2031 सूर्य 11/12/2031 चंद्र 23/12/2031 मंगल 01/01/2032 राहु 23/01/2032 गुरु 12/02/2032 शनि 07/03/2032 बुध 28/03/2032	शुक्र 07/06/2032 सूर्य 28/06/2032 चंद्र 03/08/2032 मंगल 28/08/2032 राहु 30/10/2032 गुरु 26/12/2032 शनि 04/03/2033 बुध 03/05/2033 केतु 28/05/2033
केतु - सूर्य 28/05/2033 03/10/2033	केतु - चंद्र 03/10/2033 04/05/2034	केतु - मंगल 04/05/2034 30/09/2034	केतु - राहु 30/09/2034 18/10/2035	केतु - गुरु 18/10/2035 23/09/2036
सूर्य 03/06/2033 चंद्र 14/06/2033 मंगल 21/06/2033 राहु 11/07/2033 गुरु 28/07/2033 शनि 17/08/2033 बुध 04/09/2033 केतु 11/09/2033 शुक्र 03/10/2033	चंद्र 21/10/2033 मंगल 02/11/2033 राहु 04/12/2033 गुरु 01/01/2034 शनि 04/02/2034 बुध 06/03/2034 केतु 19/03/2034 शुक्र 23/04/2034 सूर्य 04/05/2034	मंगल 13/05/2034 राहु 04/06/2034 गुरु 24/06/2034 शनि 17/07/2034 बुध 08/08/2034 केतु 16/08/2034 शुक्र 10/09/2034 सूर्य 18/09/2034 चंद्र 30/09/2034	राहु 27/11/2034 गुरु 17/01/2035 शनि 18/03/2035 बुध 12/05/2035 केतु 03/06/2035 शुक्र 06/08/2035 सूर्य 25/08/2035 चंद्र 26/09/2035 मंगल 18/10/2035	गुरु 03/12/2035 शनि 26/01/2036 बुध 14/03/2036 केतु 03/04/2036 शुक्र 30/05/2036 सूर्य 16/06/2036 चंद्र 14/07/2036 मंगल 03/08/2036 राहु 23/09/2036
केतु - शनि 23/09/2036 02/11/2037	केतु - बुध 02/11/2037 30/10/2038	शुक्र - शुक्र 30/10/2038 01/03/2042	शुक्र - सूर्य 01/03/2042 01/03/2043	शुक्र - चंद्र 01/03/2043 30/10/2044
शनि 26/11/2036 बुध 23/01/2037 केतु 15/02/2037 शुक्र 24/04/2037 सूर्य 14/05/2037 चंद्र 17/06/2037 मंगल 11/07/2037 राहु 09/09/2037 गुरु 02/11/2037	बुध 24/12/2037 केतु 14/01/2038 शुक्र 15/03/2038 सूर्य 02/04/2038 चंद्र 02/05/2038 मंगल 23/05/2038 राहु 17/07/2038 गुरु 03/09/2038 शनि 30/10/2038	शुक्र 21/05/2039 सूर्य 21/07/2039 चंद्र 31/10/2039 मंगल 10/01/2040 राहु 10/07/2040 गुरु 20/12/2040 शनि 30/06/2041 बुध 20/12/2041 केतु 01/03/2042	सूर्य 19/03/2042 चंद्र 19/04/2042 मंगल 10/05/2042 राहु 04/07/2042 गुरु 21/08/2042 शनि 18/10/2042 बुध 09/12/2042 केतु 30/12/2042 शुक्र 01/03/2043	चंद्र 21/04/2043 मंगल 26/05/2043 राहु 26/08/2043 गुरु 15/11/2043 शनि 19/02/2044 बुध 16/05/2044 केतु 20/06/2044 शुक्र 29/09/2044 सूर्य 30/10/2044

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	9
मित्र अंक	3, 5, 9
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

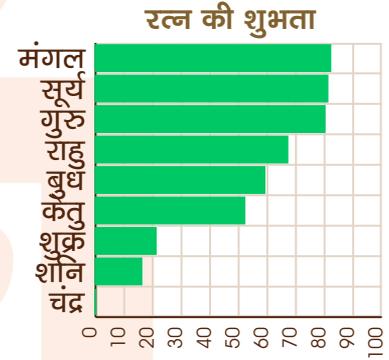
Email:- prempagare19@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	82%	सन्तति सुख, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	81%	दम्पति, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	80%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य, सुख
गोमेद	राहु	67%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
पन्ना	बुध	59%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	52%	सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
हीरा	शुक्र	21%	शत्रु व रोग, हानि
नीलम	शनि	16%	दुर्घटना, धन हानि, पराक्रम हानि
मोती	चंद्र	0%	पराक्रम हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	31/10/1979	69%	0%	70%	59%	80%	34%	28%	80%	29%
गुरु	31/10/1995	88%	0%	89%	43%	92%	0%	16%	67%	52%
शनि	30/10/2014	69%	0%	70%	65%	80%	34%	41%	74%	29%
बुध	31/10/2031	88%	0%	82%	72%	80%	34%	16%	67%	52%
केतु	30/10/2038	69%	0%	89%	59%	80%	34%	0%	55%	64%
शुक्र	30/10/2058	69%	0%	82%	65%	80%	46%	28%	74%	58%
सूर्य	30/10/2064	94%	0%	89%	59%	86%	0%	0%	55%	29%
चंद्र	30/10/2074	88%	12%	82%	65%	80%	21%	16%	55%	29%
मंगल	30/10/2081	88%	0%	95%	43%	86%	21%	16%	55%	58%

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/1979-15/03/1980 27/07/1980-06/10/1982 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 -----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
शुभ
सम
शुभ

क्षेत्र

व्यावसाय
धन
पराक्रम
सुख
शत्रु व रोग मुक्ति

Prem Pagare

Swatik Future Point
Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh
Mo.No. 9826471293
Email:- prempagare19@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

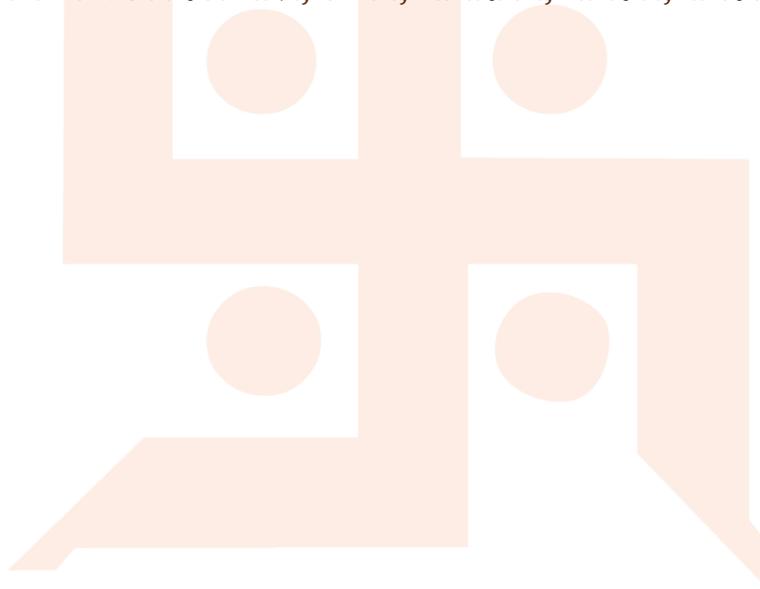
Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

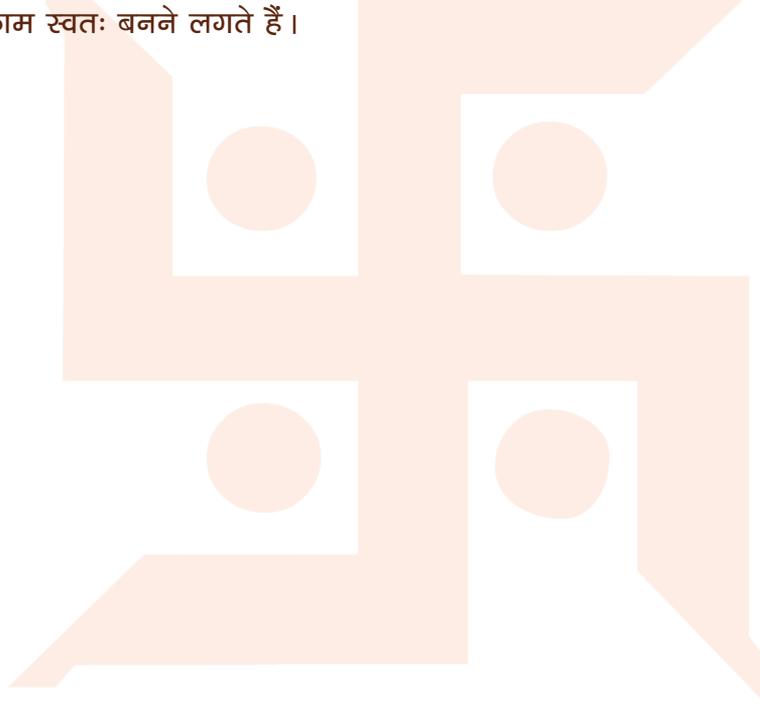
Email:- prempagare19@gmail.com

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान्, एवं कंजूस होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत्त, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर

रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

षष्ठभावा में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान्, हठी एवं स्वार्थी होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध
(30/10/2014 - 31/10/2031)**

बुध की महादशा 30/10/2014 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 31/10/2031 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपकी यात्रा, शक्ति में वृद्धि, सम्पत्ति की प्राप्ति तथा सम्बन्धियों से सहायता मिली होगी। बुध की इस दशा में आपकी जीवन वृद्धि में उन्नति, साझेदार से लाभ और व्यवसाय-व्यापार में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपका स्वास्थ्य तथा जीवन शक्ति उत्तम रहेगी। फिर भी मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक समस्या, उदर रोग आदि हो सकता है। आपमें वायु, पित्त तथा कफ तीनों दोषों का मिश्रण है, अतः आपके लिए सामान्य उपचार आवश्यक है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जीवन साथी तथा साझेदार से भी लाभ मिल सकता है। सट्टे में पर्याप्त लाभ हो सकता है। विदेश से व्यापार लाभदायक हो सकता है। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तु का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ मिलेगा और आय तथा सम्मान में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में स्थिति आपके अनुकूल होगी तथा सफलता और पदोन्नति प्राप्त होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोग अच्छा करेंगे। समाज में आपकी छवि उत्तम होगी, व्यापार में विस्तार और आय में वृद्धि होगी। कार्य के सिलसिले में आप यात्रा पर जा सकते हैं। जीवन में प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी तथा वाहन का सुख भी मिलेगा। शनि की अन्तर्दशा में आपकी छोटी लाभदायक यात्रा तथा मंगल की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप प्रतियोगिताओं तथा परिचर्चा में अच्छा करेंगे और आपकी वाक्पटुता उत्तम होगी। आप समूह-परिचर्चा तथा ऐसी अन्य गतिविधियों में अच्छा करेंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता तथा समाचार माध्यम और जनसंचार में आपकी रुचि होगी। अन्य प्रतिभाशाली, कूटनीति और बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका मस्तिष्क विवेकपूर्ण और विश्लेषणात्मक है और

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

बच्चों के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे। आपके जीवन साथी को सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और जीवन-वृत्ति में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को जमीन-जायदाद सुख और मित्रों की संख्या में वृद्धि होगी जबकि आपके पिता को सफलता और लाभ मिलेगा तथा मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहन को सट्टे में लाभ तथा सुख की प्राप्ति और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। इस दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी, सफलता मिलेगी और अध्यात्म की ओर झुकाव होगा।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका विवाह होगा, माता-पिता से लाभ मिलेगा और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में आपको कुछ लाभ और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र दशा में कुछ परिवर्तन और अचानक लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में बच्चों से सुख और सट्टे में लाभ मिलेगा। राहु के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख, यश और ख्याति मिलेगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और लाभ हो सकता है।

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

**अंतर्दशा :- बुध - राहु
(27/04/2024 - 15/11/2026)**

आपके लिए बुध की महादशा 30/10/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 27/04/2024 को प्रारंभ होकर 15/11/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चपद प्राप्त करेंगे और प्रसिद्ध होंगे। समाज की भलाई के कार्य करेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। जनता के नेता बन सकते हैं। व्यापार का विस्तार होगा, धनलाभ की संभावना है, सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर या मुकदमे में जीत होगी। शिक्षा उत्तम होगी, घरेलू सुख मिलेगा, माता से संबंध उत्तम रहेंगे। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, उससे अच्छी आय हो सकती है।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता धन का संचय करेंगे, सुख-सुविधाओं से संपन्न रहेंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा, उनकी यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ, अप्रत्याशित घटना, यात्रा, अप्रत्याशित खर्च, प्रगति में बाधाओं का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धा और परीक्षा में सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सम्मान, धन और उच्चपद की संभावना है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय अच्छी होगी; अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं में आत्मविश्वास उत्तम रहेगा, कार्यक्षमता अच्छी होगी, आय बढ़ेगी। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए काले उड़द, सतनजा और नीले वस्त्र दान दें।

**अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(15/11/2026 - 20/02/2029)**

आपके लिए बुध की महादशा 30/10/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 15/11/2026 को प्रारंभ होकर 20/02/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आपको शत्रुओं से मुक्ति मिलेगी। स्पर्धियों पर विजय होगी। अच्छी नौकरी मिलेगी। मातहतों और किरायेदारों से लाभ होगा। कार्यालय उत्तम होगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। शिक्षा उत्तम होगी। आपके कार्य से समाज को लाभ होगा। सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। उत्तम वस्त्र, उत्तम भोजन, विलास के साधन उपलब्ध होंगे। धन संचित होगा।

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी। आपके पिता सफल और धनी बनेंगे। माता की यात्रा हो सकती है।

आपके भाई-बहनों के लिए अचल संपत्ति, धन, परिवर्तन, अचानक धनलाभ और साझेदारी से लाभ का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रसन्न और भाग्यशाली रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारी धन कमाएंगे और व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- बुध - शनि
(20/02/2029 - 31/10/2031)**

आपके लिए बुध की महादशा 30/10/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 20/02/2029 को प्रारंभ होकर 31/10/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी या विरासत के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। कटु वचन बोलने से बचें। मितव्ययता और बचत द्वारा अचल संपत्ति और धन में वृद्धि हो सकती है। जीवन के समस्त सुख मिलेंगे, भले ही कुछ देरी हो जाए। शिक्षा सफलतापूर्वक पूर्ण हो सकती है, संतान से सुख और धन का लाभ होगा। सावधानी से किए निवेश द्वारा लाभ हो सकता है। कार्यक्षेत्र में तरक्की के लिए समय बहुत अच्छा है।

आपके जीवनसाथी को आपके माध्यम से लाभ हो सकता है। उनकी आय बढ़ेगी, अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश से लाभ हो सकता है। उनका कार्यालय उत्तम होगा, प्रोन्नति हो सकती है, सम्मान बढ़ेगा। स्वास्थ्य उत्तम होगा, धनी बनेंगी।

आपकी संतान का उत्साह उत्तम होगा, दृढ़प्रतिज्ञ होंगे और सफलता प्राप्त करेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन कमाएंगे; शत्रुओं पर विजयी होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी सहायता करेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को बचत और निवेश से लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। बीमारी का इलाज तुरंत करवायें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

Prem Pagare

Swatik Future Point

Vijay Nagar indore pin 452010 Madhya Pradesh

Mo.No. 9826471293

Email:- prempagare19@gmail.com